राष्ट्रीय एकता–अखण्डता और आस्थआ–विश्वास का प्रतीक भव्य मेला मुक्तिधाम मुकाम, सम्पन्न

रचनाकार –पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई

तीर्थ शिरोमणी मुक्तिधाम, मुकाम मन्दिर एवं भरे हुए मेले का दृश्य और जिन मन्दिर में स्थित श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की समाधि का भव्य दर्शन। चित्र–पृथ्वीसिंह बैनीवाल

पंचकूला/हिसार/मुक्तिधाम मुकाम बीकानेर से (हरियाणा के ब्यूरो चीफ–पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई की रिपोर्ट्स)मुक्तिधाम मुकाम बीकानेर से लगभग 80 किलोमीटर तथा नोखा–सीकर रोड़ पर नोखा 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह धाम नोखा रेलवे स्टेशन के बाद केवल सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है अर्थात नोखा तक रेल मार्ग जरूर जुड़ा हुआ है। जिस प्रकार से मोक्ष प्रदान करने वाले भरण–पोषण एवं ज्ञान स्थल सम्भराथल के सम्मान ही परम पावन मुक्तिधाम, मुकाम का भी बहुत महत्व है। यह धाम बिश्नोई समाज की श्रद्धा एवं आस्था का मूल केन्द्र है। यहाँ पर श्री गुरु जम्भेश्वर जी भगवान का भव्य मन्दिर है जो उनकी समाधि पर बनाया गया है। यहाँ पर भगवान श्री हरी विष्णु गुरु जम्भेश्वर जी ने लालासर की साथरी पर कंकैड़ी के नीचे तीन दिन ध्यान अवस्था में रहने के बाद मिंघसर बदी नवमीं विक्रमी सम्वत 1593 को इस नश्वर संसार से अपनी लीला समेट ली अर्थात शरीर छोड़ कर अनर्धान हो गये। कहते हैं उन्हें समाधि लगाने के लिए जिला जोधपुर फलोदी तहसील में स्थित जम्भसरोवर के प्रांगण में समाधि लगाने के लिए ले जाया जा रहा था कि रास्ते में तालबा गाँव के पास नागौर, जोधपुर और बीकानेर के राजघरानों में अपने अपने राज में समाधि लगवाने को लेकर ठन गई। यही नहीं युद्ध की सम्भावना पैदा हो गई थी। तब श्री गुरु देवजी ने

आकाशवाणी की कि जिस स्थल पर आप सब लोग खड़े हुए हैं वह स्थल तीनों राज्यों की सीमा लगती है। यहीं पर समाधि लगा दी जाए। उन्होंने यह भी कहा बताते हैं कि मैं किसी प्रकार का खून खराबा करवाने नहीं बल्कि अंहिसा का पालन करवाने आया हूँ।

श्री गुरु जम्भेश्वर जी भगवान द्वारा इस संसार सागर को छोड़ने के तीसरे दिन यानि मिंघसर बदि एकादशी विक्रमी सम्वत् 1593 को उन्हें समाधि दी गई थी। पौह सुदि दूज विक्रमी सम्वत् 1593 को ही वार सोमवार के दिन समाधि मन्दिर की नींव रखी गई और चैत–सुदि सप्तमी (7) विक्रमी सम्वत् 1597 वार शुक्रार मुख्य निज मन्दिर मकाम बन तैयार हो गया था। उन्हें समाज उनके पावन शरीर का अन्तिम पड़ाव समाधि होने के कारण यह महातीर्थ मुक्तिधाम मुकाम के नाम से विख्यात है।

जगदीश के देश के लिए दिए गए बलिदान हमें गर्व है–कुलदीप बिश्नोई

कश्मीर सीमा पर भारत माता की रक्षा करते हुए शहीद जगदीश बिश्नोई के गाँव में श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हुए पूर्व सांसद वर्तमान विधायक एवं महासभा के संरक्षक श्री कुलदीप बिश्नोई एवं अन्य मेलायति लोग। चित्र–विकास बिश्नोई।

हरियाणा जनहित कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष एवं विधायक आदमपुर श्री कुलदीप बिश्नोई गत रविवार को पाँचला सिद्धा के गाँव में बिश्नोइयों की ढ़ाणियों में देश की कश्मीर सीमा की रक्षा करते हुए शहीद हुए जगदीश गोदारा के घर पहुँचे। शहीद को श्रद्ध सुमन अर्पित करते हुए उन्होंने कहा कि जगदीश के बलिदान पर सम्पूर्ण शिरोमणी बिश्नोई पंथ को गर्व है। उन्होंने कहा कि जगदीश ने बड़ी वीरता के साथ मातृभूमि एवं भारत माता की सीमा की रक्षा करते हुए अपने प्राण अर्पित करके समाज का मस्तक ऊँचा किया है। विधायक कुलदीप

बिश्नोई ने कहा कि जब उन्होंने सुना कि देश की रक्षा हंदवाड़ा में छिपे आतंकवादियों से लोहा लेते हुए चार आतंकियो को मार कर पाँचला गाँव का जगदीश गोदारा शहीद हो गया तो उन्हें असहनीय पीड़ा हुई मगर देश की सीमा की रक्षा करते हुए फौजी ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिये, ऐसा सोच कर गर्व का अनुभव हुआ।

हजकां अध्यक्ष एवं आदमपुर के विधायक श्री कुलदीप बिश्नोई ने जगदीश गोदारा के 93 वर्षीय दादा भजाराम गोदारा के पैर छू कर आशीर्वाद लिया। समाज के लोगों ने शहीद परिवार को धन–राशि की थैली भी भेंट की। बिश्नोई ने बुलासर चौक जहाँ शहीद की मुर्ति स्थापित की जानी है उस जगह का निरीक्ष भी किया। उस समय उनके साथ शिरोमणी बिश्नोई महासभा के नव–निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हीराराम जी भंवाल, लोहावट के प्रधान भागीरथ बैनीवाल, फलोदी के अध्यक्ष अभिषेक भादु, बिश्नोई समाज के नागौर जिला अध्यक्ष श्री बंसीलाल गीला, जिला परिषद् अध्यक्ष रावलराम जाणी इत्यादि लोगों के साथ ग्रामीण और मेला यात्रियों की अच्छी खासी भीड़ लग गई थी।

जाम्भाणी साहित्य के प्रमाणानुसार बताया जाता है कि जब श्री गुरुदेव ने सम्भराथल धौरे पर अपने लौकिक काका पूल्होजी पंवार सहित पाँच लोगों को स्वर्ग लोक के दर्शन करवाये थे, उनमें रणधीर जी बाबल भी एक थे। तब रणधीर जी बाबल लोगों को दिखाने के लिए स्वर्ग से निशानी के तौर पर एक सोने की शिल्म ले आये थे। तब गुरुजी ने उन्हें कहा था कि जब तक यह शिल्म आप धर्म एवं परोपकार के काम में लगाओगे तब तक यह खत्म नहीं होगी। एक बात उन्होंने और कही थी कि एक दिन यही शिल्म आपकी मौत का कारण भी बनेगी। विष्णु भक्त रणधीर जी बाबल ने उस शिलम को काट काट कर अपने अणथक प्रयासों, पंचायत एवं साधुओं के सहयोग से मन्दिर निर्माण करवाया और मन्दिर बन कर तैयार हो गया। इस मन्दिर को बनवाने में बीकानेर नरेश राव जैतसी जी ने भी भरपूर सहायता की थी।

लेकिन भाग्य की विडम्बना ही कहा जा सकता है कि जब मन्दिर बन कर तैयार हुआ तो लालच वश एक दूर्जन चैनोंजी थापन ने भोजन में विष का प्रयोग कर रणधीर बाबल को मरवा दिया। इस बात से पर्दा उठने पर अन्यत्र भाग गया। उन्हें मरवाने के पीछे एक तो रणधीर जी के पास से सोने की शिल्म सहित सारा धन प्राप्त करना, दूसरा मुक्तिधाम, मुकाम निज मन्दिर पर अधिकार कर उसके पुजारी का काम सम्भालना था। उस समय निज मन्दिर का निर्माण कार्य गाँव रोळ (नागौर) के मुसलमान कर रहे थे। वे बहुत ही अच्छे कारीगर थे। आज भी रोळ के मुसलमान इस रूप में प्रसिद्धी है। रणधीर जी के स्वर्गवास के बाद उन्हें मजदूरी नहीं मिल सकी, जिसकी आशा में वे कार्य सम्पन्न हो जाने के बाद भी वे वहीं बने रहे और काफी समय तक मन्दिर उनके अधिकार में रहा। प्रत्येक वर्ष में आसोज और फाल्गुण बदी अमावस्या दो बार बहुत बड़े मेले भरते हैं।

स्वामी विवेकानन्द जी, निवासी चौधरीवाली द्वारा 36 वर्ष पहले जन्माष्टमी, विक्रमी सम्वत 2035 के अवसर पर प्रकाशित जाम्भाणी साखी संग्रह ग्रन्थ में श्री गुरुदेव के हजूरी शिष्य महात्मा श्री केशो जी गोदारा रचित मुक्तिधाम, मुकाम के महत्व को दर्शाते हुए एक बहुत ही सुन्दर साखी की रचना की है। दृश्टव्य है साखी :–

साखी

ओ निज तीरथ तालवो, जोति सही जित श्याम की ।
देव बरोबर कोई नहीं, महिमा घणी मुकाम की ।।
महिमा घणी मुकाम की सोहै, पैड़ियाँ पग दीजिये,
झूलरा जमाति छाजा, देख रचना रीझिये ।
होम यज्ञ जश जहाँ कीजे, ध्याइये पूरो धणी,
जिसो ध्यावै तिसो पावै, तालवो तीरथ सही ।।1।।

चोकी बणी मुकाम की, श्याम श्वेत पीलो बणी,
कारीगर मेळ मिली, छींट बरणी अति सोहणी ।
बणी चोकी मंझ तीरथ, ज्ञान चर्चा अति घणी,
जहाँ करै चौहलर पंछियां, मुकुट शोभा भली बणी।
चौंतरे अति चूंप दीसे, भुरज शोभा अति घणी,
गूगल की महकार आवै, चौंतरे चौकी बणी ।।2।।

खिड़की पालक देहरे, चळ सदा अति सोहवणी,
हर हूजरै दीसै भली, थिरकी थानी सुहावणी।
थिरकी थानी सुहावणी, जहाँ चाँदनी चहूँ दिशा,
झळकै जंझीर देव स्वर्गां, जोति जहाँ बिसो बिसा।
छाजा तो छाजै ताळ बाजै, काज हरि सेवा सरै,
दीसै अति सुहावणी, खिड़की तो पालक देहरे ।।3।।

कळी विराजै कांगरै, शोभा मुकुट बखाणिये,
रूँखा बलिरळ आवणों, श्याम सही जित जाणिये।
जाणिये जित श्याम सत्गुरु, पात हरि जन पेखणा,
इण्डो तो मुकाम सोहै, देव प्रीति देखणा ।
कलश अर त्रिशूल झळके, भांति हर मेलो मिली,
देख शोभा कह "केसो" कांगरै सोहै कळी ।।4।।

समाज में यह आम धारणा है कि यहाँ निष्काम भाव से सेवा दर्शन करने वालों को अवश्य ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसलिए भी इसका नाम मुक्तिधाम मुकाम कहते हैं। श्री

गुरु महाराज ने निर्वाण से पूर्व खेजड़ी तथा जाल के वृक्ष को अपनी समाधि चिन्ह बताया था। उनके अनुसार ठीक उसी स्थान पर जहाँ आज समाधि बनी हुई, वह जगह खोदने पर 24 हाथ नीचे एक त्रिषूल एवं धूणा मिला था। वह त्रिषूल आज भी निज मन्दिर मुक्तिधाम मुकाम के ऊपर लगा हुआ है। यहाँ पर प्रति वर्ष में दो बार बहुत ही विषाल मुख्य मेले लगते हैं। दोनों मेले फाल्गुण बदी अमावस्या तथा आसोज बदी अमावस्या पर लगते हैं।

रचनाकार ..श्री पृथ्वी सिंह बैनीवाल "बिश्नोई"
मो. नं. 094676–94029